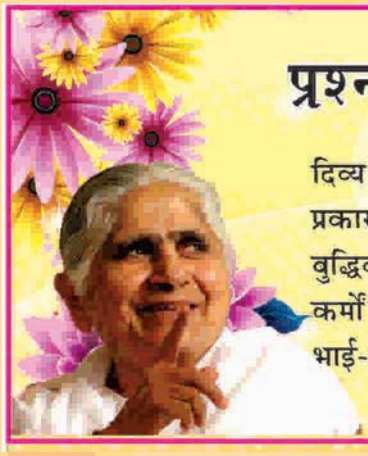

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- पुराने स्वभाव-संस्कार से क्या नुकसान है?

उत्तरः- मैं निवेदन करती हूँ कि अपना कोई स्वभाव-संस्कार थोड़ा पुराना है तो उसे प्रयोग नहीं करो। आप उसे प्रयोग करते हो तो दूसरे की अच्छी भावना को प्रयोग नहीं कर सकते हो। अगर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी होंगे तो बदलने का ख्याल आयेगा। जो त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी नहीं हैं उन्हें, मुझे बदलना है, यह भावना नहीं है। यह बदले, ऐसा भाव दुःख की लेन-देन करने वाला है। अच्छे वायब्रेशन रखो, अच्छी भावना रखो, उसका भण्डारा भरपूर हो। किसी का नाम, रूप, देश कुछ दिखाई न पड़े, कुछ याद न आये, यह नेचुरल स्थिति बनाओ तो ऐसी सेवा बाबा को अपने आप प्रत्यक्ष करेगी।

प्रश्नः- टेन्शन से बचने के लिए क्या करें?

उत्तर- बाबा कहते हैं, बच्चे शरीर छोड़ने तक भी अध्ययन करते रहना है। ऐसे नहीं, मुझे इतने साल हुए हैं, मुरलियां तो पढ़ी हैं, रिवाइज कोर्स ही तो है, ऐसे भी ख्याल से मुरली मिस की तो वह दिन अच्छा नहीं होगा। वन्डर तो यह है, रिवाइज कोर्स है, पर आज के लिए वही ज़रूरी है। बाबा ने जो समय सारणी बनाकर दी है, उस पर चलते चलो। जो कानों से सुना है, वह स्वरूप में लाओ। बाबा कहते, मेरी नाक की लाज रखो। हम किस कुल के हैं, किसके बच्चे हैं, क्या मेरा कार्य है, कहाँ के हम रहने वाले हैं, यह याद रखो। अपने आपको साफ भी रखना है, सेफ भी रखना है। जितना अपने ऊपर अटेन्शन रखो, उतना टेन्शन फ्री हो जाते हैं। टेन्शन सिर दर्द कर देता है, सिर भारी कर देता है, उमंग-उत्साह कम हो जाता है। अटेन्शन है तो कभी भारी नहीं होते, हलके रहते हैं और उमंग-उत्साह के पंख उड़ती कला में लेकर जाते हैं।

प्रश्नः- कौन-से एक शब्द में बहुत बल भरा है?

उत्तरः- सेवा करते स्थिति बनाने की अन्दर लगन हो। ज्वालामुखी योग माना अन्दर ही अन्दर ऐसी लगन हो जो मेरी स्थिति मज़बूत बने। कभी भी किसी भी कारण से परन्तु, किन्तु नहीं बोलें। स्थिति मज़बूत बनाने की अन्दर में जो भावना है उसे बाबा पूरी करते हैं। और तो कोई दुनियावी इच्छा है ही नहीं। मेरे को इच्छा यही है कि स्थिति अच्छी हो। बाकी यज्ञ मेरे बाबा का है सो मेरा है। सेवा दिल से, प्यार से करेंगे, कोई के भाव-स्वभाव में नहीं आयेंगे, सोचेंगे भी नहीं। किनारा नहीं करना है पर न्यारा रहना है। बात पूरी हुई, सेकेण्ड में आगे बढ़ो। मैंने देखा है, सच्चाई और प्रेम की भावना, कर्मयोगी अच्छा बनाती है। ज़रा भी सच्चाई में कमी न हो। गहराई में जाकर देखना है कि सच्चाई मेरे पास है? दिल में सच्चाई है तो साहेब राज़ी है। बाबा उन्हें निमित्त बनाके कई कार्य कराता है। स्वयं के पुरुषार्थ में, सेवा में सच्चाई से काम लेना है। और सब बातों को भले भूलो पर सच्चाई के इस एक शब्द को अच्छी तरह सुनो,

समझो क्योंकि इसमें बहुत बल है।

प्रश्नः- सन्तुष्ट कौन रह सकता है?

उत्तरः- बाबा ने नये साल में सदा सन्तुष्ट रहने की गिफ्ट दी है। सदा सन्तुष्ट वो रहता है जो रूहानियत में रहता है। सदा शान में रहता है, परेशान नहीं होता है। कितना महीन, सदा अतीन्द्रिय सुख में रहने वाला रास्ता बाबा ने दिखाया है। तो सदा सन्तुष्ट रहो। सन्तुष्ट न रहने का कारण सहन शक्ति नहीं है। सहनशक्ति तब आती है जब धीरज है। बाबा ने कहा है, सन्तुष्ट रहने में सब शक्तियां साथ देती हैं। पहले-पहले धीरज और सहनशक्ति बड़ा साथ देती हैं, फिर समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति – ये सब शक्तियां सन्तुष्ट रहने में मजबूत बनाती हैं। जब से बाबा के पास आये हैं, मरजीवा जन्म हुआ है, अलौकिक जन्म की खुशी है, उसमें सन्तुष्ट बहुत हैं। कोई भी कारण हमारी खुशी को गुम न करे।

प्रश्नः- शिव बाबा से मदद कब मिलती है?

उत्तरः- मुझे कोई मददगार नहीं है, यह ख्याल भी नहीं आना चाहिए। दिल का प्यार बाबा से है, हिम्मत और सच्चाई है तो अपने आप बिना बोले मदद मिलती है। मैं मानती हूँ, बाबा की मदद बहुत है पर मांगती कभी नहीं हूँ। मांगने से वे कभी मदद नहीं करेंगे। बाबा भी हठीलें हैं, हमको रॉयल बच्चा बनाते हैं। अगर कहेंगे, बाबा, मैं क्या करूं, मुझे मदद करो ना! तो नहीं करेंगे। कई लिखते हैं, मैंने बाबा से बहुत मदद मांगी, बाबा ने मदद नहीं की। कोई चिल्लाते हैं, मैं क्या करूं, माया बहुत तंग करती है.. तो चिल्लाने से बाबा मदद नहीं देते हैं। मैंने बाबा को प्यार से कहा, बाबा, आप अच्छा चला रहे हो, तो बाबा ने कहा, चल रही हो तो चला रहा हूँ। अगर कहूँ, अच्छा चलाओ ना, तो कहेंगे, लंगड़ी हो क्या! अच्छा चलूँगी, तो खुशी से मदद करते हैं। तो मैं आपको बाबा का अन्त बताती हूँ कि बाबा कैसे हैं। बाबा को समझ करके उन्हें ऐसा साथी बनाओ, जो बाबा भी देखें कि मेरा बच्चा सदा हर्षित है, मुरझाता, मूंझता नहीं है, तो खुश हो जाते हैं। जो घड़ी-घड़ी मूंझता या मुरझाता है तो बाबा क्या कहेंगे! बच्ची, मैं कहता हूँ, तुम मुसकराओ और तुम मुरझाती हो!

प्रश्नः- मुश्किलें आसान करने का आसान तरीका बताइये?

उत्तरः- बातों को समेटके पवित्रता की शक्ति को बढ़ाते चलो। सेवा भी संकल्प की शुद्धि (पवित्रता की गहराई) से करो तो हलके रहेंगे, खुश होंगे क्योंकि बिना सेवा के खुशी कहाँ से आयेगी? इस पुराने शरीर को भी भगवान ने पवित्रता की शक्ति से चलाया है। एक बारी बाबा ने कहा कि बच्ची चल रही हो तो मैं चला रहा हूँ। अगर मैं कहूँ, मैं कैसे चलूँ? बाबा मैं क्या करूँ? ऐसे कहते-कहते मेरा क्या हाल होगा? अन्तिम जन्म में बाप की श्रीमत पर चलने से हमारी अन्त मति सो गति अच्छी हो रही है। बाबा को नज़रों में रखते हैं तो और कोई बात नज़रों में नहीं आती है, बाबा को दिल में रखो तो और कोई बात दिल में नहीं आती है क्योंकि बाबा का बनने से एकदम दृष्टि, वृत्ति ऐसी हो जाती है जो और कुछ अच्छा नहीं लगता है। कितनी भी सेवा करो पर ऐसे नशे में रहो कि मैं कौन हूँ? किसकी हूँ? उसके अन्दर का हाल बहुत अच्छा है। कभी क्या करूँ, कैसे करूँ, टू मच है... ऐसी भाषा बोलने वाले को बेहाल कहा जाता है। बाबा की नज़रों से सब ठीक हो जाता है, जो उसके नजदीक आता है वो भी निहाल हो जाता है, तो ऐसे नज़र से निहाल करने वाले को स्वामी कहा जाता है। सब भाई-बहनों प्रति मेरी भावना है कि सब सेवा करें लेकिन अन्दर ही अन्दर जो बाबा ने हमको अपना बनाके मुसकराना सिखाया है वो भूलें नहीं, उसकी प्रैक्टिस रह न जाए। कोई बात में मुश्किल आयेगी तो भी मुसकराने की प्रैक्टिस से सब मुश्किलें आसान हो जाती हैं। हर समय सेवा करते, मुसकराते रहो। ऐसे बाबा को याद करने से सुख मिलता इलाही है। ❖